● **पढ़ो, समझो और गाओ :**

८. जीवन नहीं मरा करता है

– गोपालदास सक्सेना 'नीरज'

जन्म : ४ जनवरी १९२४, पुरावली, इटावा (उ.प्र.) **रचनाएँ :** बादर बरस गयो, नीरज रचनावली, नीरज की गीतिकाएँ, दर्द दिया है ।
परिचय : पद्मभूषण गोपालदास सक्सेना 'नीरज' जी कवि सम्मेलनों के मंचों पर काव्य वाचक एवं विख्यात गीतकार हैं ।
प्रस्तुत कविता में कवि ने विविध उदाहरणों के माध्यम से जीवन की समस्याओं और इनकी शाश्वतता की ओर संकेत किया है ।

जरा सोचो ..... चर्चा करो

यदि सूर्य प्रकाश न होता तो इनपर क्या प्रभाव पड़ता ?

- वनस्पति
- पशु-पक्षी
- मानव

छिप-छिप अश्रु बहाने वालो !
मोती व्यर्थ लुटाने वालो !
कुछ सपनों के मर जाने से जीवन नहीं मरा करता है ।

माला बिखर गई तो क्या है
खुद ही हल हो गई समस्या,
आँसू गर नीलाम हुए तो
समझो पूरी हुई तपस्या,

रूठे दिवस मनाने वालो !
फटी कमीज सिलाने वालो !
कुछ दीपों के बुझ जाने से आँगन नहीं मरा करता है ।

खोता कुछ भी नहीं यहाँ पर
केवल जिल्द बदलती पोथी,
जैसे रात उतार चाँदनी
पहने सुबह धूप की धोती,

वस्त्र बदल कर आने वालो !
चाल बदल कर जाने वालो !
चंद खिलौनों के खोने से बचपन नहीं मरा करता है ।

❑ उचित हाव-भाव, लय-ताल के साथ कविता सुनाएँ । विद्यार्थियों से कविता का व्यक्तिगत, सामूहिक, गुट में गायन करवाएँ । प्रश्नोत्तर के माध्यम से कविता के भाव स्पष्ट करें । कविता की कौन-सी पंक्ति उन्हें अच्छी लगी, पूछें एवं कारण बताने हेतु प्रेरित करें ।

सुनो तो जरा

ई न्यूज, आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं अन्य प्रसार माध्यमों आदि से समाचार पढ़ो/सुनो और मुख्य बातें सुनाओ ।

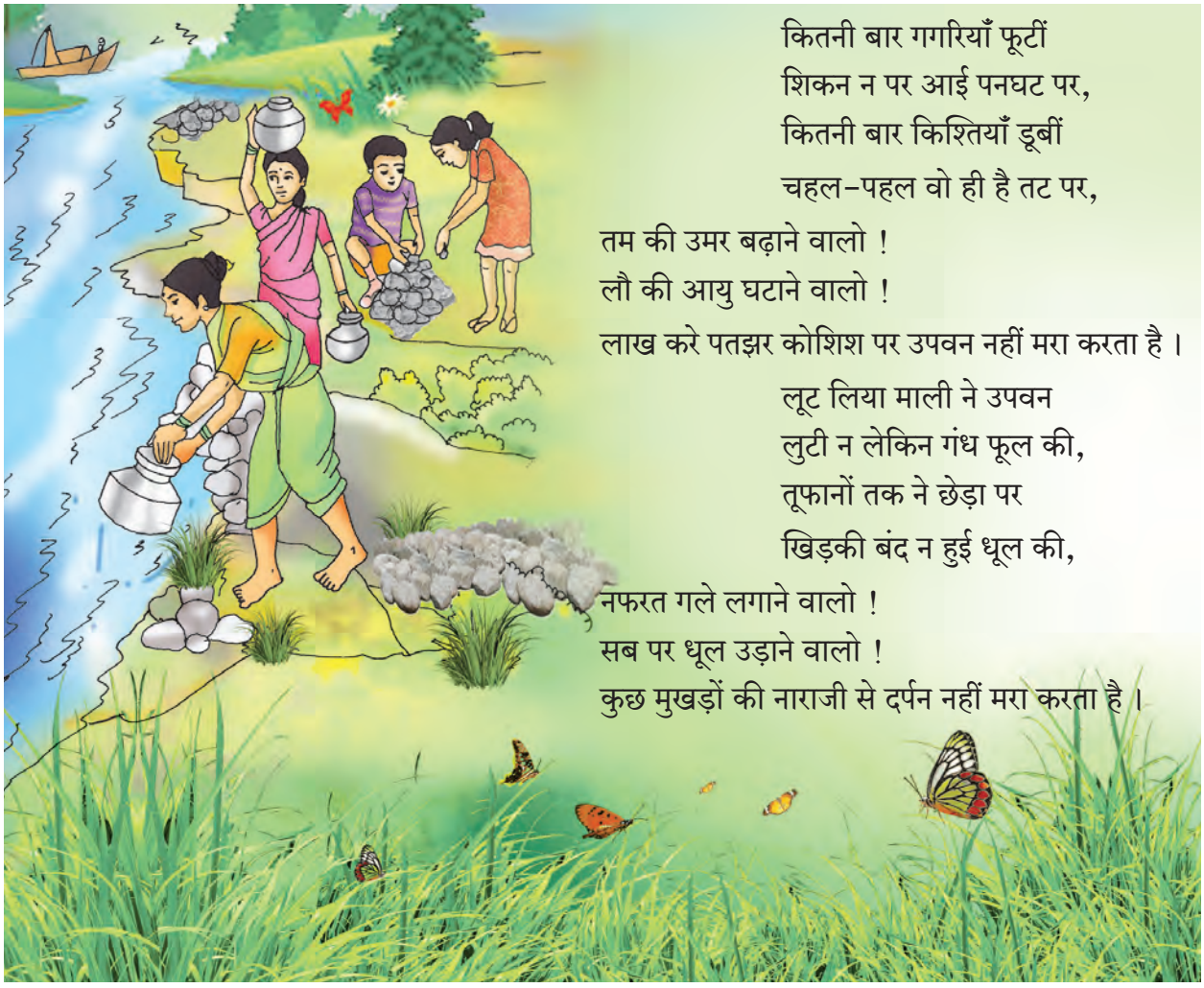

कितनी बार गगरियाँ फूटीं
शिकन न पर आई पनघट पर,
कितनी बार किश्तियाँ डूबीं
चहल-पहल वो ही है तट पर,
तम की उमर बढ़ाने वालो !
लौ की आयु घटाने वालो !
लाख करे पतझर कोशिश पर उपवन नहीं मरा करता है ।

लूट लिया माली ने उपवन
लुटी न लेकिन गंध फूल की,
तूफानों तक ने छेड़ा पर
खिड़की बंद न हुई धूल की,
नफरत गले लगाने वालो !
सब पर धूल उड़ाने वालो !
कुछ मुखड़ों की नाराजी से दर्पन नहीं मरा करता है ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

नीलाम होना = बिक जाना
जिल्द = पुस्तक का बाह्य आवरण
शिकन = सिलवट, चिंता
पनघट = वह स्थान जहाँ लोग पानी भरते हैं
किश्ती = नाव
तम = अंधकार
पतझर = पत्ते झरने की ऋतु
मुखड़ा = चेहरा

मुहावरा

गले लगना = प्यार से मिलना

अध्ययन कौशल

सौरऊर्जा पर टिप्पणी तैयार करो और पढ़ो :

www.seci.gov.in

मेरी कलम से

निम्नलिखित शब्द की सहायता से नए शब्द बनाओ :

दीपशिखा

दीप

विचार मंथन

।। जीवन चलता ही रहता ।।

सदैव ध्यान में रखो

कालचक्र निरंतर गतिमान है ।

१. निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ लिखो :

(क) 'लाख करे पतझर कोशिश पर उपवन नहीं मरा करता है ।'

(ख) 'कितनी बार गगरियाँ फूटीं शिकन न पर आई पनघट पर ।'

२. इस कविता का मुख्य आशय लिखो ।

३. जीवन की शाश्वतता को बताने वाली पंक्तियाँ लिखो ।

भाषा की ओर

पढ़ो, समझो और करो :

() छोटा कोष्ठक, [] बड़ा (वर्गाकार) कोष्ठक, {} मँझला (सर्पाकार) कोष्ठक, ^ हंसपद

छोटा कोष्ठक ()
क्रमसूचक अक्षर, अंक, संवादमय लेखों में हावभाव सूचित करने के लिए () इसका प्रयोग करते हैं ।

बड़ा (वर्गाकार) कोष्ठक []
लेखन में त्रुटि या पूर्ति बताने, दूसरे कोष्ठक को घेरने के लिए [] इसका प्रयोग करते हैं ।

छोटा कोष्ठक ()
१) सागर– (आश्चर्य से) आप सब मेरा इंतजार कर रहे हैं !
२) निम्न प्रश्न हल करो :
(अ) १५ × २६ (ब) ६००÷१५

बड़ा (वर्गाकर) कोष्ठक []
१. रवींद्रनाथ ठाकुर का अनुवादित [अनूदित] साहित्य सब पढ़ते हैं ।
२. देखो, आपका पत्र [नमूना (ड)] के अनुसार होना चाहिए ।

हंसपद ^
१) अस्मि ने ^ सुंदर भेंटकार्ड बनाया ।
२) पिता जी कल ^ मुंबई आएँगे ।

मँझला (सर्पाकार) कोष्ठक {}
(१) {गोदान, निर्मला, गबन} प्रेमचंद जी के प्रसिद्ध उपन्यास हैं ।
(२) {तुलसीदास, कालिदास} महाकवि माने जाते हैं ।

उचित विराम चिह्न लगाओ :
१. कामायनी महाकाव्य कवि जयशंकर प्रसाद
२. विशाखा लंदन से दिल्ली आती है हवा जैसी आने की सूचना नहीं देती ।
३. बालभारती हिंदी की पुस्तकें हैं । सुलभभारती घर
४. किसी दिन हम भी आपके आएँगे ।

L3A1EU

मँझला (सर्पाकार) कोष्ठक{}
एक साधारण पद से संबंध रखने वाले अलग-अलग पंक्तियों के शब्दों को मिलाने के लिए {} इसका प्रयोग करते हैं ।

हंसपद ^
लेखन में जब कोई शब्द छूट जाता है तब उसे पंक्ति के ऊपर लिखकर ^ यह चिह्न लगाते हैं ।